ISSN : 2583-2948

संपादकीय

आध्यात्मिकता और पौराणिकता का अध्ययन अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में इसलिए कमतर नहीं है कि उसकी उपयोगिता कम है अपितु इसलिए कम है क्योंकि ऐसे गहन और विपुल साहित्य की सटीक, सार्थक और ज्ञानोपयोगी समीक्षा व व्याख्या करने वाले और परिपूर्णता के साथ छात्रों , पाठकों तक पहुँचने वाले प्रबुद्ध इतने सक्षम नहीं हैं कि उस गहराई के साथ न्याय कर सकें। परिणाम स्वरूप भारतीय समाज के बहुधा लोग न ही पूर्णरूपेण भारतीय गुणों के संवाहक बन पा रहे हैं और न ही पाश्चात्य संस्कृति को व्यापक पैमाने पर आत्मसात कर पा रहे हैं। त्रिशंकु में उनकी स्थिति है। सुसभ्य बनने की प्रतिस्पर्धा में न घर बचा पा रहे हैं, न परिवार और न ही समाज। साथ ही स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार करने में भी अक्षम होते जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप समाज में विद्रूपताएं ही बढ़ रही हैं। अब चाहे वह श्रद्धा – आफताब का मर्डर केस हो या अन्य जघन्य अपराध। दुर्घटना हो जाना अलग बात है परंतु भावी दुर्घटना से परिचित होने के उपरांत भी खुद की सुरक्षा न कर पाना तथा जान - बूझकर अग्निकुंड का चयन करना विस्मित करने वाला है। दिल्ली में बहुधा अचंभित करने वाली घटनाएँ सुनाई देती हैं। जब हम बात इक्कीसवीं सदी की करते हैं तो प्रगति के इस दौर में जितना विकास हुआ उतना ही संसाधनों का दुरुपयोग भी। दिखावे की होड़ में हमारी संस्कृति का जो मूल है उससे आज की पीढ़ी न चाहते हुये भी विलग होती जा रही है। माता – पिता, गुरुजनों व आदरणीय व्यक्तियों की अवज्ञा, मूल्यों का क्षरण, खान – पान व अव्यवस्थित दिनचर्या यह गर्त की ओर उन्मुख करने वाले हैं। इन सभी विसंगतियों का एक कारण यह भी है कि आज लोग सृजनात्मकता, कलात्मकता और साहित्य से विमुख होते जा रहे हैं। जो भी पढ़ रहे हैं वह मात्र सोशल नेटवर्क पर पढ़ रहे हैं जो अधूरी जानकारी होती है। जो भी सृजन करते हैं उसमें रेडीमेट चिंतन अधिक अपनी मौलिकता कम होती है। साहित्य मानव को मानव बनाए रखने में महती भूमिका निभाता है। वह मनुष्य के भीतर की मनुष्यता को जीवित रखता है। संवेदनशील बनाए रखता है। हमारे चिंतन शैली को सात्विक और सहयोगी बनाता है। आज साहित्य ही मर रहा है और जब साहित्य नहीं टिकेगा तो विकास और स्वस्थ समाज की परिकल्पना अपूर्ण रह जाएगी।

यह अंक अनुकर्ष का द्वितीय वर्ष का तीसरा अंक है। इसमें कविता, आलोचनात्मक लेख, व्यंग्य, लघु कथा, आध्यात्म और साक्षात्कार को हर बार की तरह रखा गया है। जिन कवियों, आलोचकों और अन्य साहित्यकारों ने अपनी रचना इस अंक के लिए दी है उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। आग्रह यह भी है कि मात्र अपने ही लेख को न पढ़ें अपितु सभी रचनाओं का आस्वादन लें, अलग ही अनुभव प्राप्त होगा। अच्छा पढ़ेंगे, तभी अच्छा सोचेंगे और तभी अच्छा करेंगे। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

धन्यवाद

डॉ॰ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी
अलायंस विश्वविद्यालय, बंगलोर
फोन – 8886995593/8142623426
ईमेल – anupama.tiwari@alliance.edu.in